International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume IX, Issue VI, Nov – December 2022 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.908

आदिवासी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन – दमोह जिला (म.प्र.) के सदर्भ में

"STUDY OF MORAL VALUES & CURIOSITY TENDENCY OF STUDENTS OF TRIBAL – WITH REFERENCE OF DAMOH DISTRICT (MP)"

*Dr. Meera Madhuri Mahant and **Dr. Jitendra Choudhry
*Asst.Prof. of Botany Gyanchandra Shrivastava Govt. Post Graduate College Damoh(MP)
** Asst.Prof. of Sociology Gyanchandra Shrivastava Govt. Post Graduate College Damoh(MP)

शोध सारांश–: प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्तर, पूर्व माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर और स्नातक स्तर के आदिवासी क्षत्रे के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का आकंलन करने के लिए प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हतु प्रोफेसर ए. के. सिंह एवं डॉ. ए. सेनगुप्ता द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी तथा डॉ. राजीव कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयेाग, 'शोध अध्ययन में किया गया है। प्रस्तुत भाोध में आदिवासी क्षत्रे (दमोह जिले के तेंदूखेडा एवं जबरेा विकासखंड) के प्राथमिक स्तर, पूर्व माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर और स्नातक स्तर के 50 छात्र एवं 15 छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तथा 46 छात्र एवं 19 छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया और यह पाया कि आदिवासी क्षत्रे के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसके साथ ही अन्य बिदूंओं जैसे व्यवहार कुशलता, कार्य कुशलता व तत्परता एवं पढ़ाई के प्रति रुझान पर भी अध्ययन कार्य किए गए हैं।

मुख्य शब्द : आदिवासी क्षेत्र , नैतिक मूल्य, विचलन, जिज्ञासा प्रवृत्ति ।

प्रस्तावना–:

नैतिक मल्ूय – हमें एक–दूसरे के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए ? यह, उस व्यवहार के आतंरिक और बाह्य स्वरुप पर निर्भर करता है। क्योंकि किसी के प्रति हमारा व्यवहार एक सा होना चाहिए तथा ईमानदारी की निष्पक्षता हो, ये सभी नैतिक मूल्यों के श्रेणी में आते हैं। नैतिक मूल्य में व्यवहार के अलावा दया–भावना का भी स्थान होता है, जिसे कृपालू या दयालुता कहते हैं। प्रायः जब किसी अन्य को ये ब्यक्ति कठिनाइयों या तकलीफ में देखते हैं तो निश्चित ही उनकी सहायता करने का प्रयास करते हैं। क्योंकि मानव स्वभाव यह स्वीकार करता है कि इस प्रकार की समस्यायें व घटनायें तो किसी के भी साथ हो सकती है, इसी दयालुता बोध के कारण ही व्यक्ति एक–दूसरे की सहायता करने का प्रयास करता है। प्राचीन भारतीय परंपरा में शुरु से लेकर आज तक वसुधैव कुटुम्कम का अवधारणा पाई जाती है, जिसका अर्थ है कि पूरी धरती एक परिवार है और यहॉ सभी को एक–दूसरे के साथ परस्पर प्रेम पूर्वक रहना चाहिए। भारतीय परंपरा और संस्कृति की यह अवधारणा सह–अस्तित्व रुपी सारतत्व पर आधारित है। अर्थात् आज पूरा विश्व एक गॉव के रुप में परिणीत हो गया है।

जिज्ञासा – जिज्ञासा का मूल मतलब जानने की इच्छा, ज्ञान की चाह या ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुकता से है अर्थात् जिज्ञासा हमारे संज्ञान का मूल तत्व है। लेकिन कुछ सीखने के लिए प्रेरक, निर्णय लेने में प्रभावशाली और स्वस्थ्य विकास के लिए व्यक्ति को जिज्ञासु एवं उत्सुक होना अत्यतं महत्वपूर्ण है। इस कार्य के लिए जैविक कार्य, तंत्रिका–तंत्र व मानव मष्तिस्क का स्वस्थ्य होना आवश्यक है।

जिज्ञासा क्या है और क्या नहीं ? यह हमारी समझ को सीमित करने वाला कारक के रुप में हो सकता है, परंतु इस पर व्यापक सहमति का अभाव है क्योकिं इसका मापन करना असंभव है। मानकीकृत प्रयोगशाला कार्यों की कमी को स्वीकारने में असहजता नहीं है। क्योंकिं जिज्ञासा को कैसे नियंत्रित करें और संतुष्ट हो जाएं यह व्यक्ति के सोचं और ज्ञान परीक्षण के आधार पर समझा जा सकता है पर मसपन नहीं। हाल ही के वर्षों में अध्ययन एवं शोधों से पता चला है कि तंत्रिका विज्ञान एवं जिज्ञासा के मनोविज्ञान दोनों में व्यक्ति की रुचि की बड़ी वृद्धि देखी गई है। प्रस्तुत अध्ययन

वर्तमान स्थिति का एक चुनिंदा अवलोक न और उन कार्यों का वर्णन करते हैं जिसका उपयोग जिज्ञासा और सूचना प्राप्ति के लिए किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. आदिवासी क्षत्रे के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का अध्ययन करना ।
2. आदिवासी क्षत्रे के विद्यार्थियों के जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आदिवासी क्षत्रे के विद्यार्थियों के व्यवहार कुशलता, कार्य कुशलता एवं पढ़ाई के प्रति रुझान का अध्ययन करना।

शोध का शैक्षिक महत्व :–

नैतिक मूल्य जीवन का अमूल्य धरोहर है। नैतिक मूल्य छात्रों में शिक्षा के माध्यम से विकसित किए जा सकते हैं। ये नैतिक मूल्य ही छात्रों के विकास को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं। चूंकि जीवन की सफलता का आधार शिक्षा में ही निहित रहता है। अतः नैतिक मूल्यों के विकसित करने का सबसे प्रभावशाली केन्द्र विद्यालय को ही माना जाता है, जहां संपूर्ण शिक्षा का नींव रखा जाता है। नैतिक शिक्षा एक–दो प्रयासों या सैद्धातिक चर्चा करने से नहीं आते, वरन् यह तो जावन के प्रारंभिक अवस्था से प्रारंभ किए गए प्रयासों की निरंतरता में शामिल घटनाओं, अनुभवों, प्रदान किए गए शिक्षा और माहौल (सामाजिक वातावरण) से आते हैं। नैतिक मूल्य के विकास की झलक किसी छात्र में तब होता है जब उसके व्यवहार में साकारात्मक परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दने लगते हैं।

जिज्ञासा का 'शाब्दिक अर्थ होता है – जानने की इच्छा। अतः मूलार्थ है – ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुक होना। यदि विद्यार्थी में ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुकता होगी तो वह अवश्य ही ज्ञान प्राप्त कर लेगा। इसलिए वर्तमान शैक्षिक प्राथमिकताएं भविष्य के अनुसंधान का लक्ष्य और उसका महत्व को प्रदर्शित करना छात्र के जिज्ञासु होने का द्योतक है जिज्ञासा ही विद्यार्थियों के विकास में आज की मांग के अनुरुप नवाचार की आवश्यकता को दर्शाया करता है।

साहित्यावलोकन :–

घोरई एट ऑल (2021) ने अध्ययन हेतु 'शोध सर्वेक्षण का इस्तेमाल किया है। अपने अध्ययन ''लेवल ऑफ एजुकेशन एज एन इन्फलुएन्शियल फैक्टर ऑफ मारेल वैल्यू अमांग स्टूडेन्ट ऑफ वेस्ट बंगाल'' में छात्रा के के बीच नैतिक मूल्यों को जानना था। कुछ अन्य स्वतंत्र चर जैसे स्ट्रीम शिक्षा, व्यवसाय और पिता की शिक्षा को भी अध्ययन में 'शामिल किया गया। इस 'शोध में 165 अलग अलग स्तरीयकृत यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक की सहायता से प्रतिनिधियों का चयन किया गया। नैतिक मूल्य का मापन स्कूली छात्रों के बीच नैतिक मूल्यों के लिए परीक्षण के आधार पर मापा गया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि उच्चतर माध्यमिक स्तर और स्नातक स्तर के छात्रों के नैतिक मूल्य या निर्णय क्षमता में अंतर है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों स्तर अन्य स्तर से उच्च तो है परंतु नैतिक मूल्य भी भिन्न –भिन्न होते हैं।

एस. कुमार (2019), ''महाकाव्यों के नैतिक मूल्य पर अध्ययन'' के अनुसार यदि मनुष्य नैतिकता को ध्यान में रखकर उनका अनुसरण करें तो उसका जीवन सुखमय एवं भांतिपूर्ण हो जाएगा जिससे जीवन के अंतिम पल में मोक्ष पाने में आसानी होगी।

पी. यादव एवं एस. कुमारी (2019), ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव'' के अनुसार विद्यार्थी के जीवन में सृजनात्मकता पर नैतिक मूल्यों का सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतएव आवश्यक है कि शिक्षकों और अभिभावकों के द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास इस प्रकार किया जाए कि वह आगे बढ़कर संयमित जीवन जिये और स्वस्थ्य समाज का निर्माण कर सके।

एम. के. वर्मा (2017), ''बौद्ध धर्म के भौक्षिक चिंतन एवं नैतिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता– एक अध्ययन'' के अनुसार बौद्ध धर्म की शैक्षिक विचार धारा एवं नैतिक मूल्य का वर्तमान छात्र–छात्राओं में इसकी प्रासंगिकता स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती है। बौद्ध शिक्षा का मुख्य उद्देश्य वस्तुतः व्यक्ति का अध्यात्मिक विकास करना था, इसके साथ–साथ मानसिक और शारीरिक विकास को भी ध्यान में रखकर उददेश्यानुसार पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई थी। धर्म और दर्शन के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता था। अध्ययन केन्द्रों में बौद्ध शिक्षा दर्शन के अलावा अन्य दर्शन का भी अध्ययन कराया जाता था। सभी के लिए नियम और आचार संहिता थे, जिसका पालन करना अनिवार्य था। जहां बुद्धिमान और प्रतिभाशाली छात्रों के लिए गहन ध्यान दिया जाता, उससे कहीं ज्यादा कमजारे या मदं बुद्धि छात्रों को विशेष ध्यान दिया जाता था। इस प्रकार विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का विकास होता था जो वर्तमान में भी अनिवार्य एवं आवश्यक है।

जी. प्लक (2011), ''स्टीमुलेटिंग क्यूरिओसिटी टू एन्हांस लर्निंग'' पर अध्ययन कर पाया कि शिक्षण को निर्देशित करने के लिए जिज्ञासा मनोविज्ञान से प्राप्त निष्कर्षों को लाभकारी रुप से नियोजित किया जा सकता है। विद्यार्थियो को जानकारी प्राप्त करने एवं प्रेरित करने के लिए विशेष रुप से प्रश्न आधारित शिक्षा उपागम, समस्या आधारित उपागम संगत प्रतीत होती है। शिक्षा के विभिन्न संदर्भ में छात्रों की जिज्ञासा उनकी प्रभावी उत्तेजना के संबंध में सिद्धातं और साक्ष्य की तरह होती है। वर्तमान में छात्र–छात्राओं के ज्ञान की स्थिति बढ़ी हुई है क्योंकि वे सरल तकनीक, स्वीचिगं प्रतिमान, नियमित प्रतिक्रिया और आंकलन करने में सक्षम हुए हैं। जो उनके जिज्ञासा के माध्यम से सीखने को बढ़ाने में सहायता कर सकती है।

सी. स्क्रिवनेर (2022), ''क्यूरिओसिटी : अबिहेवियरल बायोलॉजी पर्सपेक्टिव'' पर अध्ययन कर पाया गया कि अधिकांश शोधों में जिज्ञासा पर तंत्रिका तंत्र और ऑटाजेनेटिक विशेषताओं पर ज्यादा ही ध्यान केन्द्रित किया गया, जबकि उसके विकासवादी पहलू पर कम ध्यान दिया गया है। अतः छात्रों के प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुरुप जिज्ञासा को बढ़ावा दें तो विभिन्न कार्यों की पहचान करके जिज्ञासा को अधिक मजबूत और सार्वभैमिक बनाया जा सकता है।

जे. जिराउत एवं एस. जुंबरन (2018), ''क्यूरिओसिटी इन स्कूल्स'' पर अध्ययन से पता चला कि जिज्ञासा को समझने के लिए अनुसंधान अधिक कठिन एवं अंतः विषय होता जा रहा है। इस पुस्तक में दिखाया गया है कि शिक्षा, मनोविज्ञान, कम्प्यटूर इत्यादि से शोधकर्ताओं को आने वाले नए ज्ञान के साथ रोबोटिक्स, तंत्रिका विज्ञान, चिकित्सा, तकनीकी ज्ञान, बातचीत एवं व्यवहार इत्यादि है जो एक अविश्वसनीय अवसर प्रदान करता है और मानव जिज्ञासा को बढ़ावा देता है। इसलिए वर्तमान 'शैक्षिक प्राथमिकताएं, भविष्य के अनुसंधान का लक्ष्य और उसका महत्व को प्रदर्शित करना होगा जो विद्यार्थियों के विकास में आज की मांग के अनुरुप नवाचार की आवश्यकता को सधांरित करता है।

डी. के. ल्यूकस्ज एट. आल. (2014), ''सबजेक्टिव वमल बीइंग एजअ मीडिएटर फॉर क्यूरिओसिटी एण्ड डिप्रेशन'' पर अध्ययन के अनुसार जिज्ञासा आरै अवसाद दोंनों के बीच नकारात्मक और सकारात्मक सोचं की मध्यस्थता होती है। अवसाद के साथ एक वैकल्पिक मॉडल होता है जो परिणाम के रुप में व्यक्तिपरक कल्याण तक आधिक मध्यस्थता का संकेत है जिससे पता चलता है कि जिज्ञासा नकारात्मक हो सकती है जो विद्यार्थी के ध्यान केंद्रित करने के प्रवित्ति का विरोध करती है।

सामग्री तथा क्रिया विधि :–

प्रस्तुत 'शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति तथा परिकल्पनाओुं के परीक्षण के लिए शोध सर्वेक्षण विधि का उपयागे किया गया है। प्रस्तुत 'शोध में आदिवासी क्षेत्र (दमोह जिले के तेदूंखेड़ा एवं जबेरा विकासखंड) के प्राथमिक स्तर, पूर्व माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर और स्नातक स्तर के 50 छात्र एवं 25 छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तथा 40 छात्र एवं 30 छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया और यह पाया कि आदिवासी क्षत्रे के छात्र – छात्राओं के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसके साथ ही अन्य बिंदूओं जैसे व्यवहार कुशलता, कार्य कुशलता व तत्परता एवं पढ़ाई के प्रति रुचि पर भी अध्ययन कार्य किए गए हैं।

प्रयुक्त उपकरण :– इस 'शोध में डॉ. ए. सेनगुप्ता एवं ए. के. सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी तथा डॉ. राजीव कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी का उपयागे किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय आकड़े :– इस शोध में निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से मध्यमान, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात का उपयागे किया गया है।

तालिका क्रमांक 01 – नैतिक मूल्य हेतु शैक्षिक एवं आयु वर्ग स्तरीय सांख्यिकीय मान

क्रमांक	स्तर	आयु वर्ग	छात्र संख्या	छात्रा सख्या
1	प्राथमिक स्तर	06 –10	20	7
2	पूर्व माध्यमिक स्तर,	10 –14	12	4
3	उच्चतर माध्यमिक स्तर	14 –18	10	2
4	स्नातक स्तर	18 –22	8	2
		योग	50	15

तालिका क्रमांक 02 – जिज्ञासा प्रवृत्ति हेतु शैक्षिक एवं आयु वर्ग स्तरीय सांख्यिकीय मान

क्रमांक	स्तर	आयु वर्ग	छात्र संख्या	छात्रा सख्या
1	प्राथमिक स्तर	06 –10	15	8
2	पूर्व माध्यमिक स्तर,	10 –14	12	5
3	उच्चतर माध्यमिक स्तर	14 –18	12	4
4	स्नातक स्तर	18 –22	7	2
		योग	46	19

तालिका 03 – आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति से सबंधित विभिन्न सांख्यिकीय मान

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन
नैतिक मूल्य	65	30.02	2.64
जिज्ञासा प्रवृत्ति	65	75.73	15.94

प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण :– प्रस्तुत 'शोध अध्ययन में दिए गए आकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर की गई है–

1. **आदिवासी क्षत्रे के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन** :– उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ती के लिए डॉ. ए. सेन गुप्ता एवं ए. के. सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी का प्रयागे प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर मध्यमान तथा मानक विचलन के माध्यम से निम्नलिखित तालिका क्रमांक 03 में दिखाया गया है। तालिका में अंकित सांख्यिकीय मान से स्पष्ट है कि दमोह जिले के आदिवासी क्षत्रे जबेरा एवं तेदुंखेडा के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन ज्ञात किया गया। नैतिक मूल्य के लिए मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 30.02 एवं 2. 64 प्राप्त हुआ तथा जिज्ञासा प्रवृत्ति के लिए मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 75.73 एवं 15.94 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट है कि आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य का स्तर उच्च होता है, तथा जिज्ञासा की प्रवृत्ति सामान्य स्तर की होती है।
2. **आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन** :– आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तूलनात्मक अध्ययन करने के लिए डॉ. ए. सेन गुप्ता एवं प्रोफेसर ए. के. सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में प्राप्त आकड़ों के मान को मापनी पर रखकर उनके मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को तालिका क्रमांक 04 में दर्शाया गया है।

तालिका 04 – नैतिक मूल्यों से संबंधित विभिन्न प्रदत्तों का सांख्यिकीय मान

वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रातिंक अनुपात संगणित	सार्थकता स्तर
छात्र	50	30.64	2.81	1.63	0.051
छात्रा	15	28.06	2.03		

तालिका क्रमांक 04 से स्पष्ट है कि आदिवासी क्षत्रे के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों से संबधिंत मध्यमान क्रमशः 30. 64 एव 28.06 और मानक विचलन 2.81 एवं 2.03 पाए गये मध्यमानों से यह स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं में उच्च स्तरीय नैतिक मूल्य होते हैं। यद्यपि छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों से संबंधित क्रातिंक अनुपात का मान 1.63 पाया गया, इस प्रकार सार्थकता स्तर पर 0.051 असार्थक पाया गया, जो यह स्पष्ट करता है कि आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना H_{o1} स्वीकृत की जाती है। मध्यमानों में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह केवल सयेंाग वश है।

1. **आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन** :– उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ती के लिए डॉ. राजीव कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रातिक अनुपात तालिका के माध्यम से तालिका क्रमांक 05 में दिखाया गया है।

तालिका 05 – नैतिक मूल्यों से संबंधित विभिन्न प्रदत्तों का सांख्यिकीय मान

वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रातिंक अनुपात संगणित	सार्थकता स्तर
छात्र	46	82.23	18.69	1.36	0.051
छात्रा	19	63.18	11.16		

अतः तालिका क्रमांक 05 से स्पष्ट है कि आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्ति से संबंधित मध्यमान क्रमशः 82.23 एवं 63.18 और मानक विचलन 18.69 एवं 1116 पाए गये हैं। मध्यमानों से यह स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं में जिज्ञासा प्रवृत्ति लगभग सामान्य स्तरीय होते हैं। यद्यपि छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्ति से संबधिंत क्रातिंक अनुपात का मान 1.36 पाया गया, इस प्रकार सार्थकता स्तर पर 0. 051 असार्थकता पाया गया, जो यह स्पष्ट करता है कि आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना H_{O2} स्वीकृत की जाती है। मध्यमानों में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह केवल संयोगवश है।

तालिका जॉच परिणाम :–

प्रस्तुत 'शोध में दमोह जिले के जबेरा एवं तेदुंखेड़ा विकासखण्ड के आदिवासी छात्र–छात्राओं पर अध्ययन किया गया और पाया गया कि आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थियों में उच्च स्तरीय नैतिक मूल्य होते हैं। यद्यपि आदिवासी क्षत्रे के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों से संबधिंत तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि प्राथमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक या स्नातक स्तर के विद्यार्थी के नैतिक मूल्य में अंतर केवल उम्र की परिपक्वता आरै समझ के अनुरुप होती है। अतः समान स्तर के विद्याथिर्यों के नैतिक मूल्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित आकड़ों से स्पष्ट है कि आदिवासी छात्र–छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति सामान्य है। यद्यपि आदिवासी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्ति से संबंधित तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक या स्नातक स्तर के विद्यार्थी के जिज्ञासा प्रवृत्ति में अंतर केवल उम्र की परिपक्वता और समझ के अनुरुप है।

निष्कर्ष:–

प्रस्तुत 'शोध में मध्यप्रदेश के दमोह जिले के जबेरा एवं तेदुंखेड़ा विकासखंड क्षेत्र के आदिवासी छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्य में आशिंक रुप से व्यवहारगत कमजोरी पाया जाना यह दर्शाता है कि उनको दी जाने वाली भौक्षिक सुविधाओं के साथ–साथ मुखर और व्यवहारिक दक्षता के लिए अभिभावक की शिक्षा और समाज से जुड़े रहना आवश्यक है। जिले के जबेरा एवं तेदुंखेड़ा क्षेत्र के आदिवासी छात्र–छात्राओं में सामान्य स्तर की जिज्ञासा का पाया जाना यह दर्शाता है कि उनको दी जाने वाली शैक्षिक सुविधाओं में सुधार की अत्यतं आवश्यकता है। यदि सुधार होता है तो क्षेत्र के प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों की जिज्ञासा को बढ़ाया जा सकता है, जब जिज्ञासा की प्रवृत्ति बढ़ेगी, तब सभी अपने समाज और देश को आगे बढ़ाने में सहयागे करेगें क्योंकि विद्यार्थी देश का भविष्य और राष्ट्र की पूंजी है।

संदर्भ सूची :–

1- आदिवासी क्षत्रे के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन। छविलाल सिंह एवं मोहन सिंह (2022) 10, Issue –4
2- कुमार, एस. (2019), महाकाव्यों में नैतिक मूल्य, महात्मा गाधीं काशी विद्यापीठ, बनारस।
3- कुमारी एस. एवं पी. यादव (2019), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का सृजनातमकता पर प्रभाव का अध्ययन। शिक्षा संकाय डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्याालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर छत्तीसगढ़।
4- रंजन– पी– (2018) बी– एड– महाविद्यालय कें छात्राध्यापक कें नैतिक मूल्य का सृजनात्मकता पर

प्रभाव का अध्ययन। शिक्षा संकाय, बी– आर– ए– विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार।

5- वर्मा, एम– के– (2017) बौद्ध धर्म के 'शैक्षिक चिंतन एंव नैतिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता– एक अध्ययन, जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर 'शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सकतपुरा, कोटा विश्वविद्यालय कोटा, राजस्थान।

6- रामचद्रंन वी. (2003), गॉटिंग चिल्ड्रन बैक टू स्कूल, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में मामले के अध्ययन, सेज पब्लिकेशन दिल्ली, 414।

7- Akinsola, I.F. and Olaosebikan, B.O. (2021). Content Adequacy of Oral Literature in Selected English Studies Textbooks: Implications for Inculcating Moral Values into InSchool Adolescents, International Journal of Social Learning.

8- Ghorai, N.D., Khan, S.and Samanta, T. (2021). Level of Education as an Influential Factor of Moral Value among Students of West Bengal, Asian Journal of Education and Social Studies 14(3): 47-53, 2021; Article no. AJESS.65567] ISSN: 2581-6268

9- Jirout, J. and Klahr, D. (2012). Children's scientific curiosity: In search of an operational definition of an elusive concept. Department of Psychology, Temple University, United States.

10- Lukasz, D. K. at al. (2014); Subjective well-being as a mediator for curiosity and depression. Polish Psychological Bulletin, vol 45(2), 200-204.

11- Scrivner, C. (2022). Curiosity: A Behavioral Biology Perspective. In press at the Oxford Handbook of Evolution and the Emotions.